R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 08 अंक : 09 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 दिसम्बर 2022 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

जोश व जिम्मेदारी से मना नवां महोत्सव

कुमाऊँ व गढ़वाल के 125 गाँवों की महिलाओं का समागम

'सद्भावना व संवाद' थी महोत्सव की थीम

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

27 नवंबर के दिन राजकीय इंटर कॉलेज खुमाड़ में नवाँ महिला महोत्सव हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। रचनात्मक महिला मंच हर वर्ष नवंबर माह के अंतिम रविवार को अपना महिला महोत्सव मनाता है। इस वर्ष पहली बार इसे दो दिन का आयोजन किया गया। महोत्सव में सल्ट व नैनीडांडा विकासखंड के 125 गाँव की महिलाओं ने प्रतिभाग किया। महोत्सव को संबोधित करते हुए रचनात्मक महिला मंच सल्ट की अध्यक्षता निर्मला देवी ने कहा कि मंच अब अपनी ज़िम्मेदारियों को बखूबी जानता है। हम महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं और अपने समूहों के प्रत्येक सदस्य के परिवारों की ज़िंदगी को बेहतर करना चाहते हैं। इस अवसर पर बोलते हुए रचनात्मक महिला मंच नैनीडांडा की अध्यक्षा धनेश्वरी देवी ने गढ़वाल में महिलाओं की जिन्दगी को बेहतर

महोत्सव में प्रतिभाग करती महिलायें।

करने के लिए मंच के प्रयासों को बताया। महोत्सव की थीम 'सद्भावना व संवाद' रखी गई थी।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। महिलाओं ने स्थानीय खानपान के स्टॉल लगाए। महोत्सव में स्थानीय उत्पादों को बेचने के लिए स्वयं सहायता समूहों ने अपने स्टॉल भी लगा रखे थे। इस दौरान हर वर्ष की तरह बीजों का आदान प्रदान भी किया गया। बेरीनाग से महोत्सव में प्रतिभाग करने पहुँचे गोपाल भाई के गीतो ने लोगों को उत्साह से भर दिया। महोत्सव के सायंकालीन सत्र में बाल मंचो की प्रस्तुतियों को काफी सराहा गया। सकरखोला, खुमाड़, मैंठाणी इत्यादि गाँव के बाल मंचो ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से समा बाँध दिया। महोत्सव में प्रतिभाग करने के लिए देहरादून, धारी (नैनीताल), हल्द्वानी, नई दिल्ली इत्यादि जगहों से मेहमानों ने प्रतिभाग किया। अगले वर्ष फिर मिलेंगे इस वादे के साथ महोत्सव समाप्त हुआ।

संगठन की ताकत से करना होगा चुनौतियों का मुक़ाबला: डॉ0 रवि चोपड़ा

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

महिला महोत्सव के पहले दिन 26 नवंबर को शहीद स्मारक खुमाड़ में चर्चाओं के सत्र आयोजित किये गए। 'पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन की चुनौतियाँ' सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ पर्यावरणविद् डॉक्टर रवि चोपड़ा ने कहा कि सरकार खेती को किसानों से छीनना चाहती थी, लेकिन किसानों ने अपनी संगठन की ताक़त से सरकार को क़ानून वापस लेने के लिए बाध्य किया। उन्होंने कहा कि कृषि, पशुपालन या जीवन से जुड़ी और भी चुनौतियों का मुक़ाबला सिर्फ और सिर्फ संगठन की ताकत से किया जा सकता है। उन्होंने सल्ट व नैनीडांडा विकासखंड की महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आपने अपना मज़बूत संगठन बनाया है, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

इससे पहले सत्र की शुरुआत साक्षी स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने स्वागत गान वह मंगल गीत के साथ की। सत्र की शुरुआत करते हुए बीच बचाओ आंदोलन के बीजू नेगी ने कहा कि बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ हमारी खेती को हड़पना चाहती हैं। हमारे लिये जरुरी है कि हम अपनी खेती को संभाले। इस अवसर पर बोलते हुए राजीव गांधी फाउंडेशन के विजय महाजन ने कहा कि जल-जंगल-जमीन पर समुदायों के अधिकार ज़रूरी हैं। सरकार को वन पंचायत नियमावली को समुदायोन्मुख बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित गतिविधियाँ ही आजीविका का मुख्य स्रोत हैं अत: संसाधनों पर समुदायों के अधिकार ज़रूरी हैं। सर्वोदय मंडल उत्तराखंड के अध्यक्ष इस्लाम हुसैन ने कहा कि बकरी पालन आज भी सीमांत किसानों की आजीविका का महत्वपूर्ण ज़रिया है। इसकी मज़बूती के लिए काम करने की ज़रूरत है।

चर्चा सत्र में उपस्थित वक्ता।

कार्यक्रम में प्रतिभाग करने आये सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए रचनात्मक महिला मंच की अध्यक्षा निर्मला देवी ने मंच द्वारा अपनी माँगो के लिए किये जा रहे संघर्षों को सबके सामने रखा। मंच की सचिव सुनीता देवी ने कहा कि यातायात के साधनों की कमी व वन्य जीवों के साथ संघर्ष जैसी चुनौतियां पहाड़ में जीवन को कठिन कर रही हैं। उन्होंने कहा कि हम अपनी फसलों की एमएसपी चाहते हैं पर सरकार चुप है। ग्रीन हिल्स ट्रस्ट अल्मोड़ा से महोत्सव में प्रतिभाग करने पहुँची डॉ0 वसुधा पन्त ने ग्रामीण समाज में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि महिलाएं हमारे समाज की धुरी हैं। महिलाओं के मज़बूत संगठन समाज को भी मज़बूत करेंगे। गरुड़ से पहुँचे लोकतांत्रिक कार्यकर्ता भुवन पाठक ने कहा कि आज भय का माहौल है। मीडिया भी डरा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में महिला महोत्सव जैसे आयोजन भरोसा जगाते हैं। हमें मिलकर सद्भावना व संवाद के विचार को मज़बूत करना है।

द्वाराहाट से महोत्सव में प्रतिभाग करने पहुँचे मोहन कांडपाल ने कहा कि रचनात्मक महिला मंच महत्वपूर्ण काम कर रहा है, उन्होंने द्वाराहाट विकासखण्ड के सौ गाँवों में सक्रीय महिला एकता मंच की सफलता की कहानी सुनाई। जनमैत्री संगठन के बच्ची सिंह बिष्ट ने चेतावनी देते हुए कहा कि समय निकल चुका है। यदि मनुष्य को जीना है तो उसे अपने जल-जंगल-ज़मीन को सम्भालना होगा। काने पंचायत की पूर्व प्रधान जमुना देवी ने कहा कि हम अपने संगठन की ताक़त से चुनौतियों का मुक़ाबला कर रहे हैं। उन्होंने जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मंच द्वारा किये जा रहे प्रयासों को प्रस्तुत किया।

सत्र को सम्बोधित करते हुए जनवादी लोकमंच के मनोज पाण्डे ने चुनोतियों से मुकाबले के लिये मजबूत संगठन व निरन्तर संघर्ष की जरुरत को बताया। अन्त में सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए साक्षी स्वयं सहायता समूह की अध्यक्षा दीपा देवी ने कहा कि आप सभी लोग आये, आपने अपना अमूल्य समय दिया, इससे हमारे संगठन को मजबूती मिलेगी और हम अपने मुद्दों को ज्यादा मजबूती से उठा पायेंगे। सत्र का संचालन श्रमयोग के अजय कुमार ने किया।

हमारी पाती

श्रमयोग पत्र के आठवें वर्ष का नवाँ अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग समुदाय, रचनात्मक महिला मंच, महिला समूहों व बाल मंचो में श्रमयोग पत्र निरन्तर पढ़ा जा रहा है। पत्र की सदस्यता बढ़ रही है। श्रमयोग समुदाय के सदस्य, महिलायें व बच्चे पत्र में निरन्तर लिख रहे हैं। इस तरह पढ़ने-लिखने की संस्कृति बन रही है और हम सब मिलकर सामुदायिक पत्रकारिता की मुहीम को लगातार मजबूत कर रहे हैं।

नवम्बर माह पिछले 8 वर्षों से महोत्सव का माह है। स्थानीय उत्पाद, खान-पान व संस्कृति को प्रदर्शित करता महोत्सव अब रचनात्मक महिला मंच की पहचान बन चुका है। इस बार महोत्सव दो दिन रहा। पूर्व में यह मुख्य रुप से एक दिनी आयोजन था। इस बार 26 नवम्बर को शहीद स्मारक खुमाड़ व 27 नवम्बर को राजकीय इन्टर कालेज खुमाड़ में मुख्य आयोजन हुए। स्थानीय उत्पाद, खान-पान व संस्कृति के प्रदर्शन के साथ-साथ इस बार गहन चर्चाएं भी हुई। महोत्सव के आयोजन के दौरान मंच में गजब का उत्साह रहा।

साथियो, श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन मुख्य रुप से पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- कभी न भुलाये जा सकने वाली यात्रा – पृष्ठ 3
- सर्दी–जुकाम और बुखार – पृष्ठ 3
- कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट – पृष्ठ 6
- बुजुर्गों को समय दें – पृष्ठ 7
- मानव सभ्यताओं का ज्ञान–विज्ञान–11 – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

मौसम विभाग के अनुसार नवम्बर माह में उत्तराखण्ड राज्य में औसत 2.0 मीमी वर्षा रिकॉर्ड की गई। जो सामान्य (6.4 मीमी) से कम है। राज्य में दिसम्बर माह के पहले पखवाड़े में मौसम आमतौर पर शुष्क रहेगा। दूसरे पखवाड़े में मौसम में बदलाव की सम्भावना है।

दिसम्बर माह-सावधानियाँ

जंगली जानवरों से सतर्क रहें। पशुओं के लिये घास लेने समूहों में ही जायें। डेंगू का प्रकोप जारी है। मच्छरों से बचने के लिये पूरे शरीर को ढकते हुए वस्त्र पहनें। अपने आस–पास मच्छरों को न पनपने दें। पर्वतीय क्षेत्रों में ठण्ड प्रारम्भ हो चुकी है। अब ठण्डे पानी से स्नान न करें। बाहर से घर वापस लौटने पर साबुन से हाथों को धोयें।

दिसम्बर माह में विशेष दिवस

05 दिसम्बर	–	अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस
10 दिसम्बर	–	विश्व मानवाधिकार दिवस
11 दिसम्बर	–	अन्तर्राष्ट्रीय पर्वत दिवस
22 दिसम्बर	–	विश्व गणित दिवस
25 दिसम्बर	–	क्रिसमस
29 दिसम्बर	–	टीम श्रमयोग बैठक दिवस

सम्पादकीय

शानदार नवां महोत्सव

रचनात्मक महिला मंच का 9वाँ महिला महोत्सव हर मायने में शानदार और बेमिसाल रहा। महिलाओं ने पूरे उत्साह के साथ महोत्सव में भाग लिया, चर्चाएं की, सांस्कृतिक कार्यक्रम किये व अपने स्टॉल लगाए। बीजों का आदान प्रदान भी किया गया। रचनात्मक महिला मंच की बढ़ती ताक़त ही थी कि उसने इस वर्ष इस महोत्सव को दो दिन का आयोजन बनाया। पहले दिन चर्चाओं के सत्र हुए और दूसरे दिन महोत्सव। इस बार महोत्सव में प्रतिभाग करने पहुँचे मेहमानों की संख्या ने बताया कि मंच अब मजबूत संगठन का रुप ले चुका है और उसकी पहचान बढ़ी है।

वर्ष 2014 में यह यात्रा शुरू हुई थी, जब बारह गाँवों के स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने अपने मंच का गठन कर पहली बार महोत्सव का आयोजन किया था। तब से अब तक मंच लम्बा रास्ता तय कर चुका है। इस बार सल्ट व नैनीडांडा विकासखंड के लगभग 125 गाँव की महिलाओं ने महोत्सव में प्रतिभाग किया। जो नहीं आ सके उन्होंने अपना संदेश भेजा। गढ़वाल की महिलाएँ पूरी ताक़त के साथ महोत्सव में पहुँची। कुल मिलाकर महोत्सव में मजबूत सामाजिक पूंजी दिखी।

पिछले महोत्सवों में महोत्सव के पहले दिन सायंकाल चर्चाओं के सत्र आयोजित होते थे लेकिन समय के अभाव में चर्चाएं पूरी नहीं हो पाती थी। इस बार मंच ने पूरा एक दिन चर्चाओं के लिए रखा। पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन की चुनौतियाँ सत्र में वक्ताओं नें जो बात कही वो जरुर मंच को वैचारिक मजबूती देंगी और भविष्य की कार्ययोजना बनाने में मदद करेंगी।

इस बार अलग-अलग जगहों से सद्भावना के साथी भी महोत्सव में प्रतिभाग करने पहुँचे। बड़ी संख्या में सद्भावना के साथियों का महोत्सव में भाग लेना न सिर्फ मंच को मज़बूत करेगा बल्कि मंच व सद्भावना के साथियों के आपसी संबंधों को भी मज़बूत करेगा। आने वाले समय में यह गठबन्धन बहुत सी समस्याओं के समाधान में भी मददगार हो सकता है। कुल मिलाकर यह एक शानदार आयोजन रहा। इस आयोजन ने मंच में ज़रूर आत्मविश्वास भरा होगा और आने वाली ज़िम्मेदारियों के प्रति जागरूक भी किया होगा। मंच को इस सफल आयोजन के लिये बहुत-बहुत बधाई।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

महोत्सव के शानदार आयोजन के लिये बधाई

✍निर्मला देवी, अध्यक्षा
रचनात्मक महिला मंच

साथियो नमस्कार!

आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ कुशल होगें। नवम्बर की बैठक अच्छी तरहे हो गई हैं। नौंवा महिला महोत्सव शानदार रहा। सभी लोगों ने जोर-शोर से प्रतिभाग किया। बेहतरीन आयोजन के लिये सभी को बधाई।

20 नवम्बर को रचनात्मक महिला मंच की श्रम सखीयाँ व मंच के पदाधिकारी सतखोलू गाँव (नैनीडांडा) की बहनों से मिलने गये। सबसे पहले वहाँ की बहिनों ने पूरे सम्मान के साथ स्वागत किया, उसके बाद सामूहिक खेती व पाँलीहाउस पर चर्चा की। जनगीत के साथ सभी ने अपना-अपना परिचय दिया। उन्होने हमें बताया कि उन के मन में सामुहिक खेती करने का विचार कैसे आया व सामुहिक पाँलीहाउस बनाने में कैसे सहायता मिली। उन्होने ये सब हमें विस्तार से बताया। समूह की सदस्या ग्राम प्रधान हैं। उनकी सहायता से उन्हें मदद मिली उन्होंने यह भी बताया कि हम लोग विभागों से सम्पर्क करते रहते हैं, बीज लेने खुद उनसे मिलने जाते हैं।

उन्होंने बताया कि हम सभी बहनें जब समूह में आपस में एक दूसरे से बात कर रही थी तभी सामूहिक खेती करने का विचार आया और सभी बहनें सहमत हुई। समूह की एक बहन श्यामा देवी ने अपनी जमीन दी उसे साफ किया और वहां पर सबसे पहले सामूहिक अदरक लगाया। फिर बहनें कृषि विभाग की तरफ से भ्रमण कार्यक्रम के लिए गई उन्होनें वहां पॉलीहाउस देखा। कुछ जंगली जानवरों के आतंक व समय पर बारिश न होने के कारण सब्जियाँ नहीं हो पा रही हैं, फिर उन्होने बहुत संघर्ष किया, तो विभाग के अधिकारी से बात की सारी प्रक्रिया जाने के बाद उन्होने पॉलीहाउस लगाने का विचार किया। जिसमें समूह के प्रधान की मदद से पॉलीहाउस आया। हर समूह में ऐसे ही प्रधानों की जरूरत हैं। हमें भी उनसे यह प्रेरणा मिली की संगठन में बहुत ताकत हैं। भविष्य में हमें सोच विचार के संगठन के साथ चलना हैं।

साथियों बाघ का खतरा बहुत ज्यादा बना हुआ हैं। सांकर में हमारी बहन कमला देवी जी पर बाघ ने हमला कर दिया। सभी को खतरा हैं तो अपने बच्चों व अपना ध्यान रखें। उजाला स्वयं सहायता समूह ग्राम कोट जसपुर की सदस्या की 10 बकरियों को बाघ ने एक दिन में ही अपना निवाला बना दिया हैं। बाघ के आतंक को लेकर संगठन को आगे आना ही होगा सरकार तक बात पहुँचाना जरूरी हैं। प्राकृतिक धरोहर बचाओं अभियान के अर्न्तगत हमने अपने खेतों में जो मूली, पालक, धनिया, मटर का बीज बोया था वो अब हो रहा हैं। हम सभी लोग मिल कर क्यारियां अच्छी बनाने का प्रयास कर रहें हैं।

यह मेरा पहला महोत्सव था

✍उमा, प्रशिक्षु, झिमार

यह मेरा पहला महोत्सव था। 25 नवम्बर को मैं और अनीता दिन में लगभग 1 बजे बजे शहीद स्मारक पहुँच गये थे। उस समय वहां कोई नहीं था। सब सूना-सूना था। किंतु कुछ देर में वहां समूह की सदस्याएं आ गयी, और फिर हमारे श्रमयोग के सभी साथी भी। हमने सामान लाने में सहायता की और फिर आग जलाकर चाय बनायी, पानी गरम करने के लिए रखा। धीरे-धीरे मेहमान भी आ रहे थे, एक तरफखाना बनाने की तैयारी चल रही थी, हम लोग हॉल में गये जहां जन गीतों का दौर चल रहा था माहौल एकदम खुशनुमा था। सबने भोजन किया जिसमें गडेरी की सब्जी, मडुवे की रोटी, बिच्छू घास की सब्जी, राई की सब्जी, भंगजीरे की चटनी बनी थी। उसके बाद हमने सांस्कृतिक कार्यक्रम किया और फिर सब सो गये।

26 नवम्बर की सुबह उठकर हमने सबको चाय पिलाई और नाश्ते की तैयारी करने लगे, साथ-साथ एक तरफ परिसर की सफाई चल रही थी। आज कुछ मेहमान और आये। आज का दिन चर्चा का था जिसमें पंचायती राज एंव ग्रामीण जीवन पर चर्चा होनी थी, हम लोग नेचर वॉक पर भी गये, जिसके बाद हमने श्रमयोग पत्र, श्रम-उत्पाद एंव किताबों का स्टॉल लगाया, खुमाड़ की महिलाओं द्वारा सभी का स्वागत किया गया। और सत्र शुरू हो गया। सत्र के बाद सभी लोग नीचे आये चाय पी और और खाना खाया, जिसके बाद दुबारा हम लोग बैठे और आपसी परिचय शुरू हुआ। जिसके बाद एक तरफखाना बनाने की तैयारी चल रही थी तो दूसरी तरफ हॉल में सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमें सकरखोला के बाल मंच ने ग्रुप डान्स किया और हम लोगों ने मिलकर नाटक किया, जिसमें में पहली बार प्रतिभाग कर रही थी, जिसके डॉयलाग भी तय नहीं थे अपने मन से सब करना था, पहले झिझक थी किंतु एक बार नाटक करने पर अच्छा लगा।

27 नवम्बर की सुबह हम सब उठे और नाश्ता किया आज नौंवा महिला महोत्सव हाने जा रहा है, किंतु मेरा यह पहला महोत्सव है। जब हम महोत्सव में जाने के लिए तैयार हो रहे थे तो लग रहा था जैसे बारात में जा रहे होंगे। हम लोग खुमाड़ स्कूल में पहुँचे जहां हमने श्रम-उत्पाद, श्रमयोग पत्र, एंव किताबों के स्टॉल लगाये और महिलाओं ने अपने उत्पादों के स्टॉल लगाये थे। खुमाड़ की महिलाओं ने सभी के लिए स्वागत गीत गाया, और उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा महिलाओं के भाषण थे, नाटक, झोड़ा, नृत्य आदि, महिलाओं की प्रस्तुतियां और एकता को देखकर अच्छा लग रहा था। अंत में सभी ने मिलकर फील्ड की सफाई की और हम लोग शहीद स्मारक वापस आ गये।

फिर मिलेंगे वादे के साथ महोत्सव सम्पन्न

✍विजय, श्रमयोग

जिस दिन का हम सब बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे वह दिन 25 नवम्बर को आया। 25 तारीख की शाम से शहीद स्मारक में मेहमानों के आने का सिलसिला शुरु हो गया। टीम श्रमयोग व साक्षी समूह के सदस्य मेहमानों की खाने की व्यवस्था में लग गये। बाहर से आये मेहमानों व श्रमयोग टीम के साथियों ने जनगीतों से शहीद स्मारक की रौनक बढ़ा दी।

दूसरे दिन 26 तारीख को परिचर्चाओं के सत्र थे। लिहाजा सभी लोग दूसरे दिन की तैयारियों में लग गये और सुबह दस बजे से शहीद स्मारक में समूहों की सदस्याएं पहुँचने लगी और परिचर्चाओं का सत्र शुरू हो गया जो कि शाम 5 बजे तक चला। उसके बाद सकरखोला के बाल मंच व खुमाड के बाल मंचों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

27 तारीख की सुबह 7 बजे श्रमयोग टीम के सदस्यों के साथ बाहर से आये हुए मेहमानो ने नेचर वॉक कर खुमाड़ गांव व शहीद स्मारक के बारे में जाना। 10 बजे सभी लोग महोत्सव स्थल पर पहुंचे व तैयारियों शुरू की। अलग-अलग क्लस्टर के समूहों की सदस्याओं ने मांगल गीत, स्वागत गीत, रंगारंग कार्यक्रम, नाटक, जीनगीतों, पारम्परिक खानपान के स्टॉलों की प्रदर्शनी व बीजों के आदान-प्रदान कर कुमाऊँ व गढ़वाल के महिलाओं ने महिला महोत्सव की रौनक बढ़ा दी। अन्त में अगले साल फिर मिलेगें इस वादे के साथ महोत्सव समाप्त हुआ।

हमने नया नियम बनाया है

✍हेमा देवी
सचिव, रचनात्मक महिला मंच, नैनीडांडा

आप सभी बहनो को मेरा नमस्कार। आज कल हर बैठको में महिला महोत्सव को लेकर चर्चा हो रही हैं। महोत्सव में क्या करेंगे, कैसे व्यवस्था होगी इस बात को लेकर कालिंकाखाल में बैठक भी हुई। कुछ सदस्याओ ने तय किया कि महोत्सव में जाने के लिए प्रत्येक महिला 100 रू जमा करेगी। इस बात से सभी महिला सहमत हुई परन्तु 2-3 महिलाओं ने असहमति जताई। तभी संतोषी देवी ने कहा कि अगर अभी रूपए निकालने में दिकत हैं तो सदस्यायें अपने बचत खाते से रूपए निकाल सकती हैं। इस बात से सभी लोग सहमत हो गए। एक नया नियम यह निकला कि सदस्यायें अगले साल के महोत्सव के लिए अभी से प्रत्येक सदस्या 10 रूपए प्रतिमाह जमा करेंगी। हर माह जब महीने की बचत राशि जमा करनी होती है तब 10 रू और जमा करें गे। जिससे अगले साल के लिए अभी से रूपए जमा हो जाए। सदस्याओं ने इस बात पर सहमती जताई।

कुमाऊँ से हमारे गाँव में मंच के पदाधिकारी व श्रम सखी आए थे। उनके साथ आसना व विक्रम भी आये थे। हमारे यहां पॉलीहाउस देखने के लिए कि हमने सामूहिक पॉलीहाउस कैसे लगाया हैं, उस में किस तरह से हम लोग काम करते हैं। क्या-क्या लगा रखा है। हमने उन्हें पूरी कहानी शुरू से लेकर बताई। सभी बहनों से बात कर के अच्छा लगा। हमने उन्हें अपने सामूहिक खेती का विचार कैसे आया, सामूहिक अदरक की खेती कैसे शुरू हुई, अब हमनें किस तरह से अपने काम बाटें हुए हैं, बीज कहां से लाते हैं इत्यादि पूरी बात बताई।

किसान स्वराज सम्मेलन

कभी न भुलाये जा सकने वाली यात्रा

भगवती तिवारी, रथखाल

किसान स्वराज सम्मेलन मैसूर में जाने की बात सुनकर मैं बहुत खुश थी। इसके लिए मैंने घर के सदस्यों के साथ राय मशविरा किया, सभी सदस्यों ने मेरा उत्साह बढ़ाया और मेरा मैसूर जाना तय हो गया। यहां रथखाल से हम दो महिलाओं को इस कार्यक्रम में प्रतिभाग करना था, जिसमें रथखाल कलस्टर की श्रमसखी उमा सती व मैं शामिल थे, उमा मेरी अच्छी सहेली भी है। मैंने कार्यक्रम में जाने के लिए आवश्यक वस्तुएं खरीद लीं। 8 नवम्बर को सुबह 10 बजे हमारी रामनगर से ट्रेन थी। सल्ट से प्रात: चलकर 10 बजे रामनगर रेलवे स्टेशन पहुँचना मुश्किल था, तो हम 7 की सायं को ही रामनगर

चले गये। मन में एक ही बात थी कि घर से इतनी दूर जा रहें हैं, मैं श्रमयोग के सदस्यों में राकेश को अच्छी तरह जानती हूं। क्योंकि वो हमारी मासिक बैठकें आयोजित करते हैं, इसलिए थोड़ा निश्चिंत भी थी। 7 नवम्बर की रात को मैं और उमा मेरी बहन के घर चले गये और 8 नवम्बर की सुबह रामनगर रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े जहां हमारी मुलाकात विजय जी से हुई, वो भी श्रमयोग सदस्य हैं। हम लोगों की सीट अलग-अलग थी तो मैसूर के विषय में हमारी बातचीत आपस में नहीं हो पायी। हमारी ट्रेन 2 घंटे लेट थी हम लोग सांय 5 बजे पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचे।

अब हमारी अगली ट्रेन नई दिल्ली से थी। हमारे साथ हमारे बैग के साथ 60 किलो के आस-पास श्रम-उत्पाद थी था जो हमारी बहनों द्वारा उगाया गया था। 6 बजे हम नई दिल्ली पहुँचे वहां हमारी मुलाकात बिजू नेगी जी से हुई जो हिन्द स्वराज मंच के सदस्य हैं, सभी लोग उन्हें बिजू भाई के नाम से पुकार रहे थे, और हम दादाजी कहकर। 8 बजे हमारी ट्रेन चल पड़ी। 9 बजे हमने डिनर कर लिया और कम्बल लेकर अपनी-अपनी सीटों पर लेट गये। दिन भर की थकान के कारण आँख लग गयी किंतु अचानक मथुरा स्टेशन पर बहुत सारे लोग ट्रेन में चढ़ गये, पूरा डिब्बा भर गया, मेरा दम घुट सा रहा था और राकेश पर गुस्सा आया कि पता नहीं इन्होंने कैसा रिर्जवेशन किया है। आधे घंटे में सब लोग कहीं न कहीं एडजस्ट हो गये। अधिकतर लोग नीचे फर्श पर लेट गये। मैंने एक बहन से पूछा वे लोग कहां से आ रहे हैं तो उन्होंने बताया कि हम कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर तीर्थ स्थलों पर आये थे, बात करते-करते मैं फिर पता नहीं कब सो गयी। ये दो दिन व दो रात का सफर था, लग रहा था जैसे ट्रेन मे जिन्दगी गुजर जाएगी। श्रमयोग के सदस्य हमारा अच्छी तरह ध्यान रख रहे थे। हम लोग 10 नवम्बर को लगभग 12 बजे बैंगलुरू पहुँच गये। अब हमारी यहां से मैसुरू के लिए 3 बजे फिर ट्रेन थी जो 3 घंटे का सफर था। सांय 7 बजे हम मैसुरू पहुँचे।

यहां आकर पता चला कि हमें और श्रमयोग सदस्यों को अलग-अलग होटल में रहना है, जिसकी दूरी भी काफी थी। अब हम फिर सोच में पड़ गये की अब क्या होगा। अनजान शहर, अजनबी लोग और भाषा में कन्नड या अंग्रेजी जिससे दूर-दूर तक मेरा कोई लेना देना नहीं था। मैने होटल के मैनेजर से बात की जो थोड़ा हिन्दी समझ रहे थे और बोल भी रहे थे, उनसे खाना मंगवाया और खा कर हम दोनों बहने सो गयी। सुबह हमें लेने श्रमयोग साथी आ गये और हम सब कर्नाटक मुक्त विश्वविद्याल के लिए चल पड़े जहां किसान स्वराज सम्मेलन हो रहा था। इस प्रकार का आयोजन मैं पहली बार देख रही थी। हाँलाकि स्टॉल लगाने का अनुभव था किंतु यह कार्यक्रम अलग ही था। हमारा रजिस्ट्रेशन पहले से ही था, हमारे श्रमयोग साथियों ने कागजी कार्य को पूरा कर लिया था, जिसके बाद हमें एक-एक बैग मिला, जिसमें 3 दिन के कार्यक्रमों की जानकारी और खाने के कूपन थे। यहां खाने की बहुत ही अलग व्यवस्था थी जो मुझे काफी अच्छी लगी। खाने के लिए अलग-अलग राज्यों के स्टॉल थे और हर एक के पास अलग कूपन। खाने के बाद थाली को खुद धोना भी बहुत अच्छा लग रहा था। नाश्ता करने के बाद हम लोग अपने स्टॉल पर गये जिसका नम्बर 102 था और काफी पीछे था। हमने अपना श्रम-उत्पाद लगाया, जिसमें बिजू नेगी जी ने भी बहुत मदद की। हमारे पास हमारा कोई बैनर नहीं था। हम इस कारण से बैनर नहीं लाये क्योंकि यहां से निर्देश मिले थे कि बैनर फलैक्स का न हो, लेकिन फिर हमने ए-4 शीट में स्टॉल और उत्पाद के बारे में लिखकर चिपकाया। भाषा की हमें बहुत दिक्कत आ रही थी। राकेश और विजय फिर भी समझ ले रहे थे। हम भी बहुत कोशिश कर रहे थे कि हम अपने श्रम-उत्पाद की गुणवक्ता और अपनी बहनों के संर्घष को लोगों से साझा कर पाएं। चाहे भाषा अलग हो फिर भी लोग चेहरे की मुस्कुराहट और व्यवहार से समझ रहे थे कि हम कहना क्या चाहते हैं। वहां पर अनेक स्टॉल थे और सभी स्टॉलों का उदेश्य किसानों को उनके हिस्से का लाभ पहुँचाना तथा हमारे पारंपरिक बीजों को बचाना था। इन्हीं स्टॉलों में एक स्टॉल विजय जड़धारी जी का भी था। मैं भाग्यशाली थी कि उनसे मिलने का मौका मिला। उनके स्टॉल में उत्तराखण्ड के सभी प्रकार के बीज और उनकी भी अलग-अलग किस्म थी। उनसे बात कर उनके विषय में जानकारी मिली कि वे लगभग 30 वर्षो से बीज बचाओ आन्दोलन से जुड़े हैं, तथा उन्होंने चिपको आन्दोलन में भी सक्रिय योगदान दिया था। बीजों को लेकर उनका इतना कार्य देख मैं मन में सोच रही थी मेरे से इतना नहीं भी होगा तो फिर भी मैं कुछ तो करूंगी।

12 नवम्बर यानी दूसरे दिन हमने सबसे पहले अपने स्टॉल का स्थान बदला और 86 नंबर पर आ गये। हमने बहुत सारे चार्ट तैयार किये जिसमें हमने कन्नड़ में भी लिखा और इस बहाने कन्नड़ में उत्तराखण्ड लिखना सीखा। हमें बहुत अच्छा लगा। हम लोग अन्य राज्यों से आये काफी किसान भाईयों से मिले और हमने उन्हें अपने मंच और अपने श्रमयोग के बारे में बताया। साथ-साथ विजय और राकेश ने हमें चर्चा सत्रों में भी भेजा। हमें समझ तो कुछ नहीं आया किंतु बात किसानों की ही थी। शायद खेती किसानी पर मंडराते हुए खतरों के बारे में बताया जा रहा था। 13 को समापन दिवस भी था और स्टॉल काफी खाली-खाली भी रहे किन्तु शाम तक बिजू नेगी जी के सहयोग से हमारा सारा सामान बिक गया। मैं और उमा सुबह से ही सोच रहे थे कि अगर इतनी दूर आये हैं तो कहीं घूमना भी चाहिए। हम दोनों शाम को राकेश के साथ घूमने चल दिये। सबसे पहले हम मैसूर सिल्क की साड़ियों को देखने गये जिसमें मैने अपने लिए एक साड़ी खरीदी। उसके बाद हम मैसूर पैलेस गये जिसे उड्यार पैलेस कहा जाता है। आज रविवार था तो यहां लाइट शो होना था। पैलेस मेरी कल्पनाओं से कहीं बड़ा था। हमने यहां खूब फोटो खींची और 7 बजे लाइट शो देखा। महल का एक-एक कोना रौशन था। जिसका वहां खड़े सैकड़ो लोग दीदार कर रहे थे।

14 नवम्बर को सुबह हम फिर से बैगलुरू की और निकल पड़े। हमारी ट्रेन साढे 6 बजे निकल पड़ी। राश्ते में राकेश ने अपनी बातों से हमें इतना हंसाया कि विजय के आंसू निकल पड़े, मेरे पेट में दर्द होने लगा, उमा की तो पूछो मत। पहली बार मुझे पता चला कि राकेश कॉमेडी भी करते हैं। हमें सफर का पता ही नहीं चला। हम सब आपस में अच्छे से परिचित हो गये थे। मुझे अब आने वाले 40 घंटों के सफर की चिंता नहीं थी। यह समझ आ गया था कि अब सफर बस सोते-सोते नहीं कटेगा। राकेश ने सफर में जनगीत व गढ़वाली गीत भी गाये। अब सफर ट्रेन जैसा रहा ही नहीं। राकेश को देखकर मैं यह सोच रही थी कि क्या किसी व्यक्ति के पास एक साथ इतनी सारी प्रतिभाएं भी हो सकती हैं।

पूरे सफर में हमने बिजू नेगी की के साथ भी चर्चा की। उन्होंने हमें बीज बचाओ आन्दोलन और गांधी जी के विषय में भी बहुत सारी बातें बतायी। श्रमयोग साथियों ने श्रमयोग के बारे में बातें बतायी। हमने महिलाओं की समस्याओं, खान-पान, जातिगत एंव धार्मिक भेदभाव, खादी इत्यादि पर चर्चा की। इस सफर में मेरे मन में एक बात यह निश्चित हो गयी कि श्रमयोग अन्य संस्थाओं से अलग है। आनंद विहार पहुँचकर हमारी चर्चा राजनीति पर हुई जिसमें विजय और राकेश ने हमें बहुत सारी बातें बतायी जिनसे में अनजान थी। मुझे यह यहसास भी हुआ कि मैं जो समझती थी वो कितना सही और कितना गलत था। उन्होंने यह भी बताया कि हमें किसी का फोलोअर नहीं बनना चाहिए बल्कि जनता का पक्ष देखना चाहिए। जो सही है वह सही, जो गलत है उसे गलत बोलने की हिम्मत होनी चाहिए। मेरे लिए यह सफर मेरी सोच और मेरे जीवन को बदलने वाला रहा, जिसे में कभी भूला नहीं पाउँगीं। इसके लिए मैं श्रमयोग के सभी साथियों का धन्यवाद करती हूँ।

बदलते मौसम में सर्दी-जुकाम और बुखार

डा0वन्दना, बैंगलुरु

मौसम बदलते ही कई तरह की परेशानियाँ सामने आने लगती है। गर्मियो के बाद सर्दियो का आगमन हो रहा है। पर अभी भी दिन में धूप की वजह से गर्मी है और रातें ठन्डी होने लगी हैं। इस बदलते मौसम में थोड़ी सी लापरवाही से बच्चे व बुजुर्ग बीमार हो जाते हैं। हालांकि यह सीजनल परेशानियाँ समय के साथ खत्म हो जाती हैं लेकिन इस समय अपना व बच्चो का ध्यान रख कर इसकी गंभीरता को कम किया जा सकता है।

अगर बदलते मौसम में आपको इन सब परेशानियों से बचना है तो इसके लिए आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। इसके लिए रोजमर्रा की जिन्दगी में पहनावे से लेकर खान-पान पर विशेष तौर पर ध्यान देना होगा। बदलते मौसम में छोटी-छोटी लापरवाही के कारण हम वायरल फीवर, खांसी, जुकाम जैसी बीमारियों का शिकार होते हैं।

सर्दी-जुकाम और हल्के बुखार में तुरंत दवा नहीं खानी चाहिए। हमारे शरीर के अंदर रोगों से लड़ने की क्षमता होती है। इन दिनों खान-पान और रहन-सहन का खास ध्यान रखना चाहिए। दवा खाने से तुरंत आराम तो मिल जाता है लेकिन कफ अंदर ही सूख जाता है जो बाद में चलकर गले में बडे इंफेक्शन का कारण बन सकता है।

मौसमी सर्दी जुकाम के लक्षण

मौसमी सर्दी-जुकाम में सबसे पहले नाक बहने लगती है। नाक से बहता पानी बहुत ज्यादा परेशान करने लगता हैं। बहुत ज्यादा खांसी परेशान करती है। गला सूखने लगता हैं। सर्दी की वजह से सिर में दर्द होने लगता है। कभी-कभी बुखार भी आता है।

बचाव

इस बदलते मौसम में सर्द-गरम से बचे। गरम कपडा एक दम से गर्मी लगने पर न उतारें या गर्म लगने पर पंखा न चलाएं। खान-पान से पहले और बाद मे अच्छे से हैंडवॉश करें। छींक आने पर प्रापर रूमाल या नेपकिन का प्रयोग करें। उसके बाद अच्छे से हाथ घोएँ या सैनीटाइजर का इस्तमाल करें। अगर आप सर्दी जुकाम से परेशान हैं तो अपना तोलिया अलग रखें। बार-बार मुँह और नाक को मत छुएँ। पानी को गुनगुना कर पानी में नमक डालकर कुल्ला करें। गुनगुना पानी पीऐं। ठंड से बचने के लिए सुबह शाम फुल बाजू के कपड़े पहनें, तेज धूप से घर में आते ही बदन से शर्ट तुरंत नहीं खोलें। बाहर का खान-पान कम खाएँ। बाजारों में बिकने वाले खुले पेय एवं खाद्य पदार्थो का सेवन न करें। तेज घूप से आते ही तुरंत वातानुकुलित कमरे में प्रवेश न करें।

नवजात शिशुओं की विशेष तौर पर करें देखभाल

शिशुओं के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति कम होती है इसलिए बदलते मौसम में नवजात शिशुओ की बेहतर देखभाल करनी पड़ती हैं। शिशुओं को इस तरह के मौसम में फीवर, सर्दी-जुकाम होने का खतरा ज्यादा होता हैं। बड़े बच्चों को सुबह उठने के बाद गुनगुना पानी दें और दांत साफ करने के बाद गरारा कराएँ। स्तन पान वाले बच्चों की माँ को भी अपने स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना चाहिए।

सर्दी-जुकाम और वायरल में अपनाएं घरेलू नुस्खे

सर्दी-जुखाम शुरू होते ही तुरंत एंटीबायोटिक नहीं लेनी चाहिए। कम से कम 48 घंटे का इंतजार करना चाहिए व धरेलू उपचार करना चाहिए। बच्चों में बिना डॉक्टर की सलाह के नेबुलाइजर का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। सर्दी जुखाम का सबसे बेहतरीन इलाज है भाप। अगर स्टीमर है तो दिन में दो-तीन बार जरूर भाप लें। अन्यथा आप एक पैन में पानी गर्म करके भी भाप ले सकते हैं। उसमें थोडा तुलसी और सोंठ डालकर भाप लें। दिनमें 2-3 बार ऐसा करने से आपके गले में जमा कफ खत्म होगा और नाक को राहत मिलेगी। लहसुन खाएं। जुखाम में अगर लहसुन पकाकर खाती है तो आपको तुरंत राहत मिलेगी, लहसुन में एंटी इंफलेमेटरी और एंटी माइक्रोबियल गुण होते हैं। यह हमारी रोग प्रतिकारक क्षमता को बढ़ाता है। दूध में शहद मिलाकर पीना भी जुकाम से तुरंत राहत दिलाएगा। शहद एक एंटीबैक्टीरियल फूड है जो शरीर में तापमान मैनेज करने का काम करता है। सर्दी जुखाम में हल्दी वाला दूध भी बहुत काम आता है। हल्दी में एक मजबूत एंटीऑक्सीडेंट होता है जो कई स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज में मदद करता हैं। ये थे कुछ घरेलू उपाय। ज्यादातर सर्दी जुखाम, बुखार इन धरेलू उपायों की मदद से ठीक हो जाते हैं। कुछ मामलों में दवा की जरूरत होती है। अगर दो दिनों तक लगातार बुखार न उतरे तो डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

उत्तराखण्ड शासन
आज़ादी का अमृत महोत्सव
एक ही लक्ष्य - एक ही सपना
सर्वश्रेष्ठ बने उत्तराखण्ड अपना
राज्य स्थापना दिवस
9 नवम्बर
की हार्दिक शुभकामनाएं
21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हरसंभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा।
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
संकल्प नये उत्तराखण्ड का
प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप श्री केदारनाथ व श्री बदरीनाथ धाम का पुनर्निर्माण व पुनर्विकास। इस वर्ष रिकार्ड 45 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने चारधाम के दर्शन किये।
कुमाऊं के पौराणिक मन्दिरों के लिये मानसखण्ड मन्दिर माला की कार्ययोजना।
होम स्टे योजना से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती।
चारधाम ऑल वेदर रोड से राहें हुई आसान। टनकपुर-पिथौरागढ़ भी शामिल।
केंद्र सरकार से पौंटा साहिब-देहरादून, बनबसा-कंचनपुर, भानियावाला-ऋषिकेश, काठगोदाम-लालकुंआ-हल्द्वानी बाईपास और रुद्रपुर बाईपास परियोजनाओं की महत्वपूर्ण सौगात।
प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत प्रदेश के लगभग 9 लाख 38 हजार किसानों के खातों में लगभग 1767 करोड़ की राशि हस्तान्तरित की जा चुकी है।
किसानों को तीन लाख रुपए और महिला स्वयं सहायता समूहों को बिना ब्याज के पांच लाख रुपए तक का ऋण।
कोविड काल से दो साल में 600 से अधिक नये उद्योगों की स्थापना, 35 हजार करोड़ से अधिक का निवेश, 90 हजार से अधिक लोगों को मिला रोजगार।
वोकल फॉर लोकल के लिये एक जनपद दो उत्पाद योजना लागू।
समान नागरिक संहिता पर बढ़े कदम, समिति द्वारा ड्राफ्ट पर मंथन।

परियोजनाओं का महत्वपूर्ण सौगात।

- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल परियोजना पर तेजी से कार्य गतिमान, टनकपुर-बागेश्वर और डोईवाला से गंगोत्री-यमुनोत्री रेललाइन के सर्वे पर सहमति।
- पर्वतीय क्षेत्रों में रोप-वे हेतु पर्वतमाला परियोजना, प्रधानमंत्री जी द्वारा गौरीकुण्ड - केदारनाथ और गोविंदघाट - हेमकुण्ड साहिब रोप-वे का शिलान्यास।
- दूरस्थ व सीमांत क्षेत्रों में 1202 मोबाइल टावर की स्वीकृति।
- जल जीवन मिशन के अंतर्गत राज्य के ग्रामीण क्षेत्र के 7 लाख से अधिक परिवारों को पानी के कनेक्शन।
- दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अंतर्गत गांवों का शत प्रतिशत विद्युतिकरण।
- देहरादून में भव्य सैन्य धाम की स्थापना पर तेजी से काम, राज्य के वीरता पदक से सम्मानित सैनिकों को देय एकमुश्त अनुदान में वृद्धि।
- रानीबाग (हल्द्वानी) स्थित एचएमटी की 45.33 एकड़ जमीन केन्द्र से उत्तराखण्ड को हस्तांतरित।

- भ्रष्टाचार पर रोक लगाने हेतु भ्रष्टाचार मुक्त एप-1064, सभी शिकायतों पर गम्भीरता से एक्शन।
- उत्तराखण्ड राज्य आंदोलनकारियों की पेंशन, वृद्धावस्था, विधवा और दिव्यांगजन पेंशन की राशि में वृद्धि। आंगनबाड़ी और आशा बहनों के मानदेय में बढ़ोतरी।
- स्कूल शिक्षा और उच्च शिक्षा में राज्य में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की शुरुआत।
- मुख्यमंत्री बालाश्रय योजना: आपदा, महामारी एवं दुर्घटना के कारण अनाथ बच्चों की स्कूली शिक्षा की व्यवस्था राज्य सरकार द्वारा।
- आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना में सभी परिवारों को 5 लाख रुपये वार्षिक तक के निःशुल्क ईलाज की सुविधा।
- ऊधमसिंहनगर में एम्स का सैटेलाईट सेंटर की केंद्र से सहमति।
- राज्य लोक सेवा आयोग के माध्यम से 7 हजार पदों पर पारदर्शिता के साथ भर्ती प्रक्रिया प्रारंभ। जल्द 19 हजार पदों पर भी शुरु की जाएगी भर्ती।
- "मुख्यमंत्री उदीयमान खिलाड़ी उन्नयन योजना" में 08 से 14 वर्ष के उभरते खिलाड़ियों को 1500 रुपये प्रतिमाह की खेल छात्रवृत्ति।

"माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरुप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिए विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है। - सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर
आसना

नैनीडांडा क्लस्टर में श्रम जन स्वराज अभियान के अन्तर्गत समूहों की बैठकों में सामाजिक चेतना को लेकर बात हुई। विषय था कि- गाँव में जब कोई बीमार होता है या परिवार में कोई परेशानी होती है तो ग्रामीण अंधविश्वास में उलझ जाते हैं। यह अच्छा विचार नहीं हैं। लोगों के अन्दर वैज्ञानिक चेतना का होना जरूरी है। समाज में व्याप्त कुरीतियों को लेकर मंच को बोलना चाहिए। जितना चुप रहेंगे उतने अत्याचार सहने होंगे।

20 नवम्बर के दिन कुमाऊँ से रचनात्मक महिला मंच के पदाधिकारी व श्रम सखी नैनीडांडा ब्लॉक के सतखोलू गाँव में भ्रमण के लिए आई, वहां की बहनों की सामूहिक ताकत को देखने और उनसे प्रेरणा लेने। भ्रमण कार्यक्रम अच्छा रहा।

26-27 नवम्बर को 9वां महिला महोत्सव होने वाला हैं। जिसमें महिलाएं स्टॉल लगाने व सांस्कृतिक कार्यक्रम, मंगल गीत की तैयारी कर रही हैं। सदस्याओं ने महोत्सव में आने के लिए एक साथ धनराशि जमा कर के श्रम सखी को सौंप दी है। 26-27 नवम्बर के दिन गढ़वाल की बहने शहीद स्मारक खुमाड़ पहुँचीं जहां पर महोत्सव का आयोजन था। सदस्याओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम देखे व किये भी। उन्होंने अपने लिए साल का एक दिन निकाला व उसे जिया। सब बहुत खुश थीं और मैं भी कि वह पुरूष की पोषाक पहन कर मंच में प्रतिभाग कर रहीं थी। जो ग्रामीण महिलाओं के लिए आसान बात नहीं हैं।

प्राकृतिक धरोहर बचाओं अभियान के अन्तर्गत सदस्याओं ने बीज कोष के रूपए जमा किये व जलवायु परिवर्तन को लेकर चिंता जताई। सदस्याओं ने बताया कि आज कल जिस तरह से गाँव में धुंध लग रही है, पहले कभी धुंध नहीं लगती थी ।2-3 साल से ही ऐसा देखने को मिल रहा हैं। असमय बारिश का हो जाना और 1-2 दिन तक तेज बारिश होना हमारी फसलों के लिए खराब हैं। इस बार हमारी अदरक, आलू की फसल खराब हो गई है। अनुमान हैं इस बार उत्पादन अच्छा नहीं होगा।

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर
रेनुका

इस बार 1 तारीख को क्षेत्रिय कार्यालय हिनौला में बैठक की गई जिसके कारण 1 तारीख में होने वाली बैठकों को आगामी दिनांक तक स्थगित किया गया। बैठक में तीन नये प्रशिक्षुओं का चयन हुआ और मसिक बैठकों की कार्ययोजना फिर से बनायी गई ताकि बैठकों में प्रशिक्षुओं को भी शामिल किया जाए। इस बार की बैठकों में चर्चाए काफी विस्तार पूर्वक चली क्योंकि पिछले माह में अधिकतर समूहों की बैठकें असोज के कार्या के चलते नहीं हो पायी थी। इस बार की बैठकों में अन्य मुददों के साथ-साथ महिला महोत्सव पर भी चर्चा होनी थी। सभी को यह जानकारी दी गयी कि इस बार का महोत्सव दो दिवस का होगा जिसमें पहले दिन चर्चा सत्र होंगे जिसमें पंचायती राज एंव ग्रामीण जीवन पर चर्चा होंगी तथा अगले दिन महोत्सव। जिसे सुन सदस्याएं आने के लिए लिए उत्सुक थी। इस बार महोत्सव में महिलाओं की उत्सुकता को देखकर अच्छा लग रहा था। महिलाएं स्टॉल एंव सास्कृतिक कार्यक्रमों की अच्छी तरहे तैयारी कर रही थीं। बैठक में मैसूर जाने वाली सदस्याओं के बारे में भी बताया गया जिसे सुन सभी महिलाएं खुश थीं की हमारा रचनात्मक महिला मंच आगे बढ़ रहा है। बैठकों में सदस्याओं को सामुहिक खेती के बारे में बताया गया, इस बार अधिकतर समूहों में महोत्सव को लेकर दो-दो बार तक बैठकें आयोजित की गयी। 27 नवंबर को धूम-धाम से महिला महोत्सव मनाया गया।

गिगंडे क्लस्टर
गुंजन

नवम्बर माह में गिंगडे क्लस्टर के अलग-अलग गॉवो में गठित स्वयं सहायता समूहो की मसिक बैठकों का आयोजन किया गया। इस माह बैठको के आयोजन का मुख्य विषय 9वें महिला महोत्सव का आयोजन था। जिसमें सदस्याओ के साथ चर्चा में यह बताया कि रचनात्मक महिला मंच अपना 9वें महोत्सव का आयोजन 26-27 नवम्बर को कर रहा है। इस वर्ष महोत्सव की थीम 'सदभावना व संवाद' है।

इस बार का महोत्सव दो दिन का कार्यक्रम है, जिसमें 26 तरिख को परिचर्चा सत्र हैं जो शहीद स्मारक खुमाड में आयोजित किया जाऐगा। जिस में चर्चा के दो विषय ग्रामीण जीवन की चुनौतिया व वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था पर चर्चा की जायेगी। 27 तारिख रविवार के दिन मुख्य कार्यक्रम महिला महोत्सव राजकीय इंटर कॉलेज खुमाड़ में होगा। जिसमें सदस्याओ के साथ आने जाने की व्यवस्था, खानपान के स्टाल, संस्कृतिक कार्यक्रम व बीजो के आदान प्रदान को लेकर चर्चा की गई।

सदस्याओ के साथ नये श्रम-उत्पाद के एकत्रीकरण को लेकर भी चर्चा की गई। जिसमें संगम स्वयं सहायता समूह ग्राम डयौना व प्रगति स्वयं सहायता समूह ग्राम काने की सदस्याओ द्वारा श्रम उत्पाद मडुआ, भगजीर, तिल व जखिया आदि दिया गया। सितम्बर माह में सदस्याओ को जो बीज वितरित किये गये थे उनके प्रति पुष्टि ली गई जिसमें सदस्याओ का कहना था कि अभी हम ने बीज बोया ही हैं अभी जमा नहीं हैं ।

जमरिया व थला क्लस्टर
सुरेन्द्र, श्रमयोग

थला व जमरिया क्लस्टर मे स्थित अलग-अलग गॉवों में गठित स्वयं सहायता समूहों की नवम्बर माह में मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। बैठको में समूह सदस्यों ने अपना प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला वार्षिक महिला महोत्सव के सफल आयोजन हेतु जमकर तैयारियां की व सामुदायिक सहभागिता की मजबूत करने का प्रयास किया। बैठकों में महिला मुद्दो पर चर्चा भी हुई। बैठकों में सल्ट क्षेत्र की परम्परा एवं संस्कृति को जीवंत करना 9वें महिला महोत्सव का उद्देष्य बताया गया। बैठको में दोनों क्लस्टर के समूह सदस्यों ने अपने रचनात्मक महिला मंच को और अधिक मजबूत व रचनात्मकता पूर्ण करने की बात की। इसी के साथ महोत्सव में पंचायती राज व्यवस्था व ग्रामीण जीवन की चुनौतियो पर होने वाली चर्चाओं के लिये तैयारियाँ की गई।

जसपुर क्लस्टर
आसना, श्रमयोग

जसपुर क्लसटर में इस बार सबसे पहले नये समूहों की बैठकें की गई। सदस्याओं के काफी सवाल थे संगठन को लेकर। उन सदस्याओं को सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये और श्रमयोग की यात्रा, रचनात्मक महिला मंच की यात्रा के बारे में बताया गया। सभी समूहों में 26-27 नवम्बर को होने वाले महिला महोत्सव के बारे में सूचित किया गया। सदस्यायें 26 तारीख के दिन परिचर्चा सत्र में आई और उन्होंने बाहर से आये हुवे मेहमानों की बात भी सुनी। चर्चा का विषय पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन में चुनौतियों को लेकर था। मंच की सदस्याओं ने भी इस विषय पर बात रखी।

सदस्याओ ने महोत्सव में आने के लिए कार्यक्रम तैयार किये। इस बार हर क्लसटर से एक कार्यक्रम होना होना था। सदस्यायें महोत्सव को लेकर बहुत उत्साहित थी। जसपुर क्लस्टर से महिलाओ ने शराबियों के उपर नाटक तैयार किया था। जिसमें वो ये बताना चाह रही थी कि महिलाओं को ऐसे शराबी लोगे के साथ कैसा कष्ट भरा जीवन बिताना होता हैं। महोत्सव में सदस्यायें बीजों के आदान प्रदान के लिए बीज भी लेकर आई थी। महोत्सव में गढवाल व कुमाऊ की बहनें एक दूसरे को बीजों का आदान-प्रदान करती हैं और बीज बचाओ व घर में बीज बनाओं का संदेश देती हैं। बैठको में इस विषय में विस्तार से बात होती हैं।

20 नवम्बर के दिन कुमाऊ से रचनात्मक महिला मंच के पदाधिकारी व श्रम सखी नैनीडांडा ब्लॉक के सतखोलू गाँव में भ्रमण के लिए गए और उनका वहां बहुत अच्छे से स्वागत हुवा। कुमाऊँ की बहनो ने वहां जा कर सामुहिक खेती की ताकत को देखा व साथ ही ये जाना कि जब अपने समूह के बीच से कोई महिला प्रधान होगी तो क्या लाभ होगा। कुमाऊँ की बहनों ने गढ़वाल की बहनों को महोत्सव में आने का आमंत्रण दिया।

घचकोट क्लस्टर
विजय, श्रमयोग

घचकोट क्लस्टर में महीने दर महीने की बैठकों की प्रक्रिया से स्वयं सहायता समूह मजबूती के साथ आगे बढ़ रहे है। समूह के सदस्य अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रहे हैं। अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष अपनी जिम्मेदारियों को समूह के सदस्याओं से साझा कर रहे हैं। समूह की बैठकों में श्रम सखी की भागीदारी बढ़ने लगी है। क्लस्टर इंचार्ज के अन्य कार्यो में व्यस्तता होने से श्रम सखी अब अकेले समूहों की बैंठकों में भाग लेने के लिए तैयार रहती हैं।

नवम्बर माह के अन्तिम रविवार को महिला महोत्सव की तैयारियों को लेकर टीम सदस्य व श्रम सखी बैठक में तय की गई जिम्मेदारियों को सभी सदस्याओं ने बखूबी निभाया। समूह की मीटिंग के दौरान सभी लोगों से महिला महोत्सव के बारे में चर्चायें की गई। समूहों की बैठकों के दौरान पता चला कि पिछले महोत्सव में लगे स्टॉलों को देखकर कई समूह अपना स्टॉल लगाने की तैयारी कर रहे हैं। इस बार महिला महोत्सव दो दिवसीय था। महोत्सव के पहले दिन शहीद स्मारक खुमाड़ में परिचर्चाओं के सत्र थे, जिसमें 'उत्तराखण्ड में पंचायतीय राज के मजूदा हालात व भविष्य की संभावनाएं' व 'ग्रामीण जीवन में चुनौतियों' के विषय पर चर्चा थी। अगले दिन राजकीय इण्टर कॉलेज खुमाड़ में महिला महोत्सव का होना तय था।

महिला महोत्सव में आने वाले मेहमानों की रूकने, खाने की व्यवस्था खुमाड़ के साक्षी स्वयं सहायता समूह ने की थी। महिला महोत्सव के दिन नजदीक आते ही समूहों में संवाद काफी बढ़ गया था। इस प्रक्रिया में समूह काफी मजबूत हुए। समूहों ने गहन तैयारियाँ की। मांगल गीत, स्वागत गीत, झोड़े, नाटक तैयार किये गये। स्टॉल इत्यादि की तैयारियॉ जोरों पर रही।

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औंलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 नवम्बर	20	21	18	21	20	22	15	23
2 नवम्बर	20	21.5	19	20.5	20	22.5	16	23
3 नवम्बर	20	21	18	20	20	21.5	14	23
4 नवम्बर	20	20	19	21	20	20.5	17	23
5 नवम्बर	20	21	20	21	20	20	15	23
6 नवम्बर	20	20.5	18	21	20	19.5	14	23
7 नवम्बर	20	19.5	15	20.5	20	19	12	22
8 नवम्बर	20	20	12	20	20	19.5	13	22
9 नवम्बर	20	19	11	20.5	20	19	13	21
10 नवम्बर	19	19.5	10	20	19	18.5	12	21
11 नवम्बर	19	19	10	20	19	18	12	21
12 नवम्बर	19	18.5	11	20	19	18	13	21
13 नवम्बर	19	18	15	20	19	17.5	13	20.5
14 नवम्बर	19	18.5	10	19.5	19	18	12	20
15 नवम्बर	19	17.5	10	19	19	18	13	20
16 नवम्बर	18	17	10	19	18	17.5	12	20
17 नवम्बर	18	16.5	10	19	18	17	11	20
18 नवम्बर	18	17	9	19	18	17.5	11	20
19 नवम्बर	18	16.5	13	19	18	16	15	20
20 नवम्बर	18	16	10	18	18	16.5	13	20
21 नवम्बर	18	16.5	12	18	18	17	18	20
22 नवम्बर	17	16	11	18	18	16.5	15	20
23 नवम्बर	17	16.5	10	18	17	17	11	20
24 नवम्बर	17	16	15	19	17	16.5	18	20.5
25 नवम्बर	17	16.5	11	19	17	17	14	20.5
26 नवम्बर	17	16	10	19	17	15.5	13	20
27 नवम्बर	17	15	12	19	17	16	15	20.5
28 नवम्बर	17	14.5	13	18	17	15.5	11	20.5
29 नवम्बर	17	14	19	18	17	15	15	19.5
30 नवम्बर	17	14	13	18.5	17	15	18	19.5

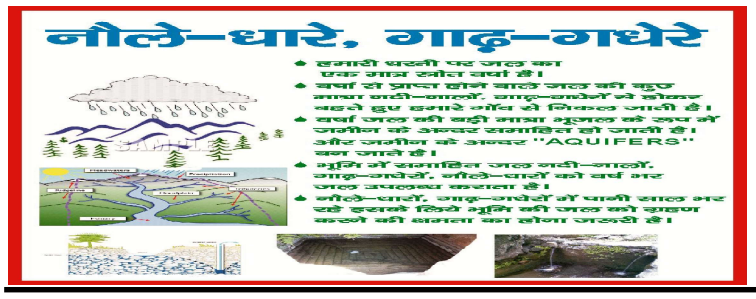

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

27 नवम्बर, 2022

स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौंठा पानी नौला	6.6	6.6	6.6	27	27	27
धारा पानी	7	7	7	37	37	37
शिव मन्दिर नौला	7.1	7.1	7.1	38	38	38
हैंड पंप नौला	6.8	6.8	6.8	37	37	37

बुजुर्गों को समय दें

✍शशी करगेती

भारत की 2021 की जनगणना के अनुसार भारत की 64.61 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में निवास करती है। भारतीय सांख्यिकी संस्थान के आकड़ों की बात करें तो 900,239,774 लोग 2021 में भारत के गाँवों में रह रहे थे जो कि 2020 के मुकाबले 0.25 प्रतिशत बढ़ा है। इसका मतलब गाँवों को लोग आज भी पसंद कर रहे हैं व गाँवों में लोगों के रहने की इच्छा बढ़ रही है। अब प्रश्न यह है कि अगर लोगों की गाँव में रहने की इच्छा बढ़ रही है तो फिर भी शहर की आबादी क्यों बढ़ रही है। आज हर व्यक्ति की चाहत है की शहर में मेरा अपना एक घर हो, जहाँ मैं जब चाहे जितने दिन चाहे रह सकूँ, ऐसा क्यों? इसका एक मूलभूत कारण है की गांव में स्वास्थ्य, शिक्षा व रोज़गार का अभाव होना व जिसके लिए हर व्यक्ति को कभी ना कभी शहर की शरण में जाना पड़ता है। यही कारण है कि शहर में भीड़ बढ़ती जा रही है व कई लोग छोटे छोटे कमरों में किसी तरह से शहर में अपना जीवनयापन कर रहे हैं और जिसका बोझ शहर पर पढ़ रहा है, कहीं स्वच्छ हवा नहीं तो कहीं साफ पानी नहीं और कहीं कहीं तो लोग मलिन बस्तियों में नारकीय जीवन जीने को तक मजबूर है। दिनों दिन शहर भरते जा रहे हैं व कई तरह की समस्याएं शहर में बढ़ रही हैं।

अलग-अलग व्यक्ति व संस्थाओं की नजर में शहर में बढ़ती समस्याओं के कई कारण हो सकते हैं, लेकिन मेरा यह मानना है सरकारों द्वारा गांव को नकार देना व सरकारी योजनाओं को गांव में अमलीजामा न पहनाना शहर की समस्याओं का एक प्रमुख कारण हैं। मैं बहुत साल गांव में रहा हूँ फिर कई साल शहर में रहा हूँ व लगभग भारत के सभी प्रमुख शहरों व नगरों में समय बिताया है इसके पश्चात पूरा देश घूमकर लगभग पिछले पांच सालों से पुन: गांव में रह रहा हूँ। इस बीच अंतर बहुत आया है शहर में भी और गांव में भी, ना सिर्फ गाँव में अंतर आया है बल्कि शहर व गांव के लोगों की सोच में भी बहुत अंतर आ गया है। पहले गांव में मनोरंजन का साधन चौपाल, चोर सिपाही के खेल, कबड्डी, खेत में क्रिकेट व रात को अलाव जलाकर आपस में किस्से कहानियाँ सुनाना होता था। रामलीला के सीज़न में जगह जगह रामलीलाएं होती थी, नई जगह नया सामान या नया पकवान का लुत्फउठाने के लिए मेला लगने का इंतजार रहता था। उसके बाद टीवी आया पहले ब्लैक एंड व्हाइट फिर रंगीन। पहले टीवी का समय शाम 6-10 बजे होता था सिर्फ एक फ़िल्म आती थी वह भी रविवार को, जो लगभग 5.30 बजे शाम चलती थी व विज्ञापन समाचार के बाद लगभग 10:00 बजे खत्म होती थी, बुधवार व शुक्रवार को फिल्मी गीतों का चित्रहार आता था। उसके बाद सुबह का टीवी प्रसारण शुरु हुआ फिर कुछ समय बाद दिन का और फिर केबल टीवी आने के बाद लगभग 24 घंटे का टीवी प्रसारण शुरू हो गया। टीवी प्रसारण आने के बाद लोग अपने अपने घरों में सिमट कर रह गए। सिर्फ शहर ही नहीं बल्कि गांव में भी टीवी संस्कृति बहुत बड़ा परिवर्तन ले कर आयी। अब लोग काम से ही या मतलब से ही एक दूसरे के घरों में जाने लगे। बिना किसी काम के किसी के यहाँ न तो लोग जाते और ना ही बिना किसी काम के अपने यहाँ लोगों का आना पसंद करते।

टीवी के बाद स्मार्ट फ़ोन आया व सस्ता इंटरनेट आने से तो लोगों के बीच दूरियां और बढ़ गई। टीवी संस्कृत में तो कम से कम लोग घरों के अंदर रहते थे व परिवार के सभी सदस्य एक साथ कार्यक्रम का मज़ा लेते थे लेकिन मोबाइल खासतौर से स्मार्ट फ़ोन के आने से तो घर के सदस्य भी एक दूसरे से दूर हो गए हैं, व कई बार सभी लोग घर में होते हुए भी यहाँ तक कि एक ही कमरे में होते हुए भी एक दूसरे के साथ नहीं होते हैं। दोस्तो मोबाइल सुविधा एक बहुत अच्छी सुविधा है जिसके द्वारा आप पल भर में देस दुनिया की खबर हर आदमी तक पहुँच जाती है, लेकिन सबसे दुखद पहलू यह है कि मोबाइल या स्मार्ट फोन आने से हमारे घर के बड़े बुजुर्ग बहुत अकेले पड़ गए हैं क्योंकि अब उनके साथ बातें करने वाला समय बिताने वाला या उनकी बात सुनने वाला, उनके किस्से कहानियाँ अनुभव सुनने वाला अब घर में आस पड़ोस में कोई नहीं होता है। जो बुजुर्ग समझदार रहे स्मार्ट फोन चलाना सीख लिया उनके लिए ज्यादा दिक्कत नहीं होती बल्कि वह भी इस नई तकनीक का भरपूर आनंद उठाते हुए मैंने देखे हैं लेकिन जो बुजुर्ग स्मार्ट फ़ोन चलाना नहीं सीख पाए या जिनके पास यह उपलब्ध नहीं है उनका दर्द व पीड़ा कई बार मुझे व्यक्तिगत तौर पर बहुत दुख देती है।

मेरी कई बार कोशिश रहती है कि मैं ऐसे बुजुर्ग लोगों के साथ बैठूं चर्चा करूँ उनके किस्से कहानियाँ अनुभव सुनूं व उनके अनुभवों को अपने जीवन में इस्तेमाल करूँ और सच पूछो तो उनके अनुभव से मुझे कई बार बहुत कुछ सीखने को मिला है। उसके बाद उनके साथ बिताए पल से जो सुकून शांति व मुस्कान उनके चेहरे पर नजर आती है वह अद्भु- होती है। कई बार तो जान बूझकर मैं ऐसा करता हूँ अपनी खुशी के लिए व अपने बुजुर्ग लोगों की खुशी के लिए मैं उनके साथ बैठ जाता हूँ। यही मैं आप लोगों से भी निवेदन करता हूँ कि अगर आपके पास समय हो तो आप भी ऐसा जरूर कीजिये। जब भी आप अपने आस-पास किसी बुजुर्ग को देखें तो उन्हें अभिवादन के साथ साथ उनके साथ कुछ न कुछ बात अवश्य करें। उनसे घर की बाहर की कुछ न कुछ चर्चा अवश्य करें व जितना हो सके अपने समय का कुछ हिस्सा उनको देने का प्रयास करें। दोस्तों हमारे घर के बुजुर्गों ने हमें बहुत कुछ दिया है, उन्हींकी मेहनत व जिंदगी भर कार्य करने का नतीजा है की हम कुछ कर पाए हैं व हमारी पीढ़ी आगे बढ़ पाई है। उन्हीं की मेहनत का नतीजा है की हम आज अपने पैरों पर खड़े हो पाए हैं और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दीक्षा देने के काबिल बने हैं। आज हमारे पास सब कुछ है तो ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि हम अपने साथ साथ अपने बच्चों के साथ-साथ अपने बुजुर्गों का भी ख्याल रखें, उनकी भी सुख-सुविधा का ध्यान रखें।

दोस्तो हमारे बुजुर्गों को हम से सिर्फ आवास भोजन व खाने पीने की ही जरूरत नहीं रहती है वे लोग चाहते हैं की हम अपना कुछ समय भी उन्हें दें। हमसे कुछ समय की भी वे उम्मीद रखते हैं कुछ बातें करने की उम्मीद रखते हैं कुछ चर्चा करने की उम्मीद रखते हैं कुछ अपने अनुभव साझा करने की उम्मीद रखते हैं और हाँ एक बात का ध्यान और रखना स्मार्ट फ़ोन ने नई पीढ़ी को हमारे नए बच्चों को बहुत अभिमानी बना दिया है, वे कई बार बड़े बुजुर्गों से बहुत असभ्य तरीके से बात करते हैं, ऐसे में हमारा फर्ज है कि हम भी अपने बुजुर्गों से सही तरह से पेश आएं उनके साथ सही व्यवहार करें उनकी बातों का सही तरीके से जवाब दें व अपने बच्चों को भी ऐसा व्यवहार करना सिखाएं वरना ऐसा हो सकता है की जो असभ्य व्यवहार हम अपने बुजुर्गों के साथ कर रहे हैं वह हमारा बच्चा भी देखता है, और ऐसा हो सकता है की कल को ऐसा ही व्यवहार वह हमारे साथ भी कर सकता है। इसलिए मेरा आप सभी से निवेदन है कि कृपया जितना हो सके अपने घर के बुजुर्गों का सम्मान करें वह उनके साथ समय साझा करने की कोशिश करें।

हम कोई पर्यावरणविद नहीं

बच्ची सिंह बिष्ट
जनमैत्री

हम कोई पर्यावरणविद नहीं हैं। हमारी यह भी अपेक्षा नहीं है कि कोई हमको पर्यावरण के संरक्षण का खास व्यक्ति मानकर सम्मान दे। हमने या हमारे जैसे ही लोगों ने पानी, जंगल, मिट्टी समेत पूरे परितंत्र के साथ खिलवाड़ किया है। हमारा समूह या संगठन उसको समझकर अपने स्तर पर कुछ आह्वान, कुछ छोटी छोटी कोशिशें कर रहा है। हमारे साथ वे लोग खड़े रहते हैं, जिनका हमारी मिट्टी और परिवेश से गहरे सरोकार हैं, यकीन मानिए नदियों के संकट के साथ वैश्विक जलवायु परिवर्तन का प्रभाव बहुत गहरा है। सरकार सावधान है। वैश्विक मंच में कॉप 27 की वार्ताएं शुरू हो चुकी हैं। दुनिया भर में तापमान वृद्धि के लिए जिम्मेदार कारकों की पहचान की जा रही है। हमारे उत्तर भारत में जल्दी जल्दी भूकंप के झटके आ रहे हैं। जहां जमीन के अंदर का पानी ज्यादा खींच लिया गया है, आने वाला बड़ा भूकंप वहां सबसे मारक होगा ऐसा भी कुछ वैज्ञानिक कह रहे हैं।

इन तमाम घटनाओं, स्थितियों और परिघटनाओं के बीच हम क्या कर सकते हैं, हम यही तय कर रहे हैं। हमारी आबादी लगातार अपनी जड़ों से उखड़ रही है और हमारे जो लोग गांवों में रहकर अपनी जिंदगी बिता रहे हैं, उनके लिए अनिवार्य व्यवस्थाओं में लगातार कमी हो रही है। ग्राम परिवार के हमारे परिजनों पर भूकंप, अधिक या कम बरसात, तेज बारिश, अति निर्माण और प्राकृतिक आपदाओं का सबसे कम असर हो और वे अपने दैनंदिन जीवन की जरूरतों को पूरा करते हुए, सुरक्षित और सम्मान के साथ जी सकें, पहले यही सुनिश्चित करना है।

दिल्ली ही क्यों देश के तमाम महानगर वायु समेत अनेक प्रदूषण झेल रहे हैं। संपन्न लोगों की भीड़ मध्य हिमालय की ओर चल पड़ी है। ऐसे में उन्होंने इस परिवेश को भी जहरीला ही बना देना है। उनको मिट्टी, हवा, पानी, जंगल, नदी आदि की समझ, उसके साथ लगाव और उसके नष्ट होने पर पीड़ा नहीं होती। यह हम पर्वतीय उत्तराखंड और हिमालय के रहवासियों की पीड़ा और संवेदना से जुड़े विषय हैं, इसलिए हम कुछ ऐसा करना चाहते हैं जिसके कारण आने वाली पीढ़ियों के लिए कोई मार्ग दर्शन हो, हमारा परिवेश सुरक्षित और हमारे परिजन अपनी मिट्टी में बने रहें। हम अपने सोचने, कुछ करने और खुद की जवाबदेही को निभाते हुए, अपना होना सार्थक करना चाहते हैं। गंगा का विशाल दोआबा और हिमालय से निकलने वाली नदियों से जीवन, समृद्धि पाने वाले हमारे सभी परिजन यह सुनिश्चित करें कि स्वस्थ हिमालय उनकी भी जिम्मेदारी है...

जय नंदा, जय हिमाल।

सामूहिक खेती करने से आपसी प्रेम बढ़ता है

अंजू देवी
श्रमसखी, थला क्लस्टर

रचनात्मक महिला मंच व श्रमयोग के सभी साथियों को नमस्कार!

मैं गढवाल के रामी बौराणी समूह के सदस्यों से मिलने का वर्णन कर रही हूँ। सल्ट के मंच के पदाधिकारी व श्रम सखियाँ 20 नवम्बर रविवार के दिन गढवाल के लिये निकले। शंकरपुर से हमारे साथ आसना व विक्रम भी थे। हम लोग करीब 11 बजे के लगभग सतखोलू गाँव में पहुँचे। वहाँ पहुच कर रामी बौराणी समूह की सदस्याओं ने तिलक लगाकर हमारा स्वागत लिया और उसके बाद चाय, पानी पीकर हम लोगों ने अपना-अपना परिचय दिया और साथियो सलाम हैं जन गीत गाया।

उसके बाद आसना और विक्रम ने समूह के पॉलिहाउस के विषय में चर्चा की। बाद में रामी बौराणी समूह की सदस्याओं ने हम लोगों को बताया कि उन लोगो ने किस प्रकार से मिलकर व प्रधान जी के सहयोग से पॉलीहाउस बनाया और उसके बाद कृषि विभाग के साथ सम्पर्क करके बीजों का इन्तजाम किया। फिर उन लोगों ने पॉलीहाउस में अलग-अलग किस्म की सब्जियाँ उगाई और समूह के माध्यम से सब्जियाँ बेचकर अपने समूह की आजीविका भी बढ़ाई।

रामी बौराणी समूह की सदस्याओं को देखकर हम सभी लोगो को एकता में रहने के प्रेरणा मिलती हैं। सामूहिक खेती करने से आपसी प्रेम व आपसी सहयोग भी बढ़ता हैं और इससे संगठन को और ज्यादा मजबूती मिलती हैं। समूह का अर्थ एक साथ संगठन में रह कर एक दूसरे का सुख-दुख व आपसी सहयोग करना भी होता हैं। मैं तो अपनी गढवाल की इन बहिनों के बने इस समूह को देखकर बहुत खुष हुई और हर एक समूह से यही उम्मीद करती हूँ कि सब एकजुट होकर अपनी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बने और अपने आधिकार के प्रति अपनी लड़ाई लड़े व जागरूक बने।

ढाई आखर..... आजादी का संघर्ष और हमारी स्मृति

✍बिजू नेगी

इस साल रचनात्मक महिला मंच का वार्षिक महोत्सव, सल्ट ब्लॉक के खुमाड़ में आयोजित किया गया था। क्या यह संयोग ही था कि इस साल जब हमारी आजादी के 75 साल हो गए हैं, हम एक ऐसे स्थान पर मिले जिसका देश की आजादी के संघर्ष में एक अहम योगदान रहा है। 8 अगस्त 1942 को जब ''भारत छोड़ो'' सत्याग्रह शुरू हुआ, तो उस नारे का उद्घोष यहां भी गूंजा। 5 सितम्बर 1942 को लोगों के प्रतिरोध को खत्म करने के लिए सरकार की ओर से गोलियां चली, और चार आंदोलनकारियों की शहादत हुई-सर्व श्री खीमा नंद, गंगा दत्त, चूड़ा मणि और बहादुर सिंह मेहरा।

कुमांऊ में आजादी के संघर्ष में भागीदारी पहले सत्याग्रह-असहयोग आंदोलन-के दौरान भी थी, जब 14 जनवरी 1921 को उत्तरायणी के अवसर पर बागेश्वर में सरयु के किनारे लोगों ने ''कुली-बेगार'' के विरोध में उसके रजिस्टरों को नदी में फेंक दिया और 1929 में जब गांधी जी ने बागेश्वर में उस सिविल नाफरमानी का वर्णन सुना तो उन्होंने उसे ''कुमांऊ की बारदोली'' की संज्ञा दी। कुली-बेगार के आंदोलन के बाद से ही खुमाड़ के स्वतंत्रता सेनानी पुरुषोत्तम उपाध्याय का उदय हुआ।

गांधीजी की उसी सभा में एक श्रोता चन्द्र सिंह भण्डारी भी उपस्थित थे, जो गढ़वाल पलटन में थे और जिन्होंने अपने फौजी साथियों के साथ मिलकर 1930 में पेशावर में खान अब्दुल गफ्फार खान के ''खुदाई खिदमतगारों'' के अहिंसात्मक आंदोलन पर अंग्रेज अफसरान द्वारा गोली चलाने के आदेश को तुरंत, स्पष्ट ठुकराकर न सिर्फ अदम्य साहस का परिचय दिया बल्कि 1919 के जालियांवाला बाग काण्ड को दोहराए जाने से रोककर उसका दाग उत्तराखण्ड के सैनिकों के मस्तक पर लगने नहीं दिया। उसी के बाद से चन्द्र सिंह, ''गढ़वाली'' कहलाए जाने लगे।

1930 में ''नमक सत्याग्रह'' की छाप उत्तराखण्ड में भी पड़ी। देहरादून से लगते, खाराखेत गांव में निमी नदी के पानी से नमक बनाया गया। यह उस पूरे सत्याग्रह में शायद पहला उदाहरण था जिसमें नदी के पानी से नमक बनाकर नमक-कानून तोड़ा गया और दर्जनों सत्याग्रहियों को कैद हुई थी। उसी सत्याग्रह में, सल्ट ब्लॉक के ही तीन गांव-चमकना, डभरा और हटुली में भी नमक बनाकर विरोध किया गया।

खुमाड़ में महिला महोत्सव के बहाने आजादी की इन दो-चार बातों को याद करते हुए, हम खुद से भी यह सवाल कर सकते हैं कि खुद उत्तराखण्ड में ही कितने लोग हैं जो अपने बुजुर्गों के संघर्षों के उस इतिहास से वाकिफ हैं? खुमाड़ के शहीद सर्वश्री खीमा नंद, गंगा दत्त, चूड़ामणि और बहादुर सिंह मेहरा के बारे में हम कितना जानते हैं? नगण्य ही। खुमाड़ में ही हर साल 5 सितम्बर को एक सरकारी कार्यक्रम में शहीदों को याद किया जाता है-मगर मोटा-मोटा ये औपचारिक ही रस्म होती है जिसे उसके बाद अगले 364 दिन किसी ठण्डे बस्ते में पड़ी रहती है। देहरादून में भी, इधर कुछ सालों से, खाराखेत नमक सत्याग्रह को लेकर कुछ स्थानीय संगठन जरूर उसकी बातें कर रहे हैं या वहां कुछ छुट-पुट गतिविधि करते हैं, लेकिन शहर का व्यापक आमजन आज भी उस जगह के ऐतिहासिक महत्व से अनजान ही है। उन शहीदों व स्वतंत्रता के परवानों के बाद की पीढ़ी जा चुकी है या उम्र-दराज हो चुकी है तो ऐसे में आज की पीढ़ी, आजादी के उस दौर और अपने बुजुर्गों के संघर्षों की स्मृति को किस तरह टटोलेगी? या वह टटोलेगी भी कि नही? और अगर स्मृति नहीं होगी तो वह टटोलेगी ही क्या?

इस तरह के सवाल इसलिए बहुत जरूरी हो जाते हैं क्योंकि हम अपने इतिहास को बिसराने-और व्यवस्थित तौर से बिसराने के दौर से गुजर रहे हैं। तो क्या हम इन कोशिशों को दर किनार कर उन सवालों या चिंताओं पर कुछ मनन कर सकते हैं? क्या हमारा स्थानीय इतिहास हमारे स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकों का हिस्सा हो सकता हैं? या हमारी चर्चाओं का? क्या हम अपने-अपने स्तर पर उस दिशा में कुछ करने का सोच सकते हैं? इससे पहले कि वह इतिहास सदा के लिए दफन हो जाए!

अमरीकी दार्शनिक व लेखक जॉर्ज सान्तयाना का कथन है, ''जो इतिहास को याद नही रखते, वे उसे दोहराने के लिए अभिषप्त होते हैं।''

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

अब बोलेगी कठपुतली

संचार अभियान के संचालक रामलाल किसी परिचय के मोहताज नहीं है। लोक माध्यमों के द्वारा समाज को जागरुक करने की उनकी लम्बी यात्रा रही है। आजकल अपनी कठपुतली को लेकर वो डिजिटल माध्यम से `अब बोलेगी कठपुतली' कार्यक्रम कर रहे हैं। यू-ट्यूब में इस कार्यक्रम को अच्छी लोकप्रियता मिल रही है। यहाँ प्रस्तुत है कठपुतली द्वारा अभिनित उनका नाटक- 'टैक्स टैक्स'।

गोपाल-टैक्स लेंगे, टैक्स लेंगे, गरीब अमीर सबसे लेंगे, हर वस्तु पर टैक्स लेंगे, हर चीज पर टैक्स लेंगे, आलू, गोभी, धनिया, टमाटर, दूध, दही, तेल और पापड़। फरमान सरकार का फरमान, आका का टैक्स दो, देश चलाना है। टैक्स दो आपदा समस्या आई है, टैक्स दो कोरोना आया है, टैक्स दो देश को विश्वगुरु बनाना है। टैक्स टैक्स सब मिलकर टैक्स दो।

चमेली - लूटते रहो, लूट मची है, तुम्हारा राज है, क्या कमी है।

गोपाल- अरे चमेली

चमेली- हाँ..

गोपाल- मैं तो कविता गा रहा हूँ। मेरे हाथ में क्या है, मैं भला कौन सा टैक्स लूट सकता हूँ।

चमेली -लगता है मैं पागल हो जाऊंगी।

गोपाल- क्यों

चमेली- कुछ लोग इतने महंगे कपड़े पहनते हैं

गोपाल- हाँ हाँ...

चमेली- बड़ी-बड़ी पेंशन लेते हैं, बिजली, पानी, टेलीफोन के बिल के पैसे नहीं देते, फ्री में रहते हैं। इनके पास इतना धन कहां से आता है।

गोपाल- देख ऐसा है ना सारा खेल है सत्ता का। सत्ता जब आ जाती है, सत्ताधारी जो लोग हैं वह सब ही ऐसा कर सकते हैं। क्योंकि उनके पास हमारे टैक्स के पैसे हैं, वैसे तो हमारे टैक्स के पैसे से विकास हो रहा है, लेकिन नेताओं की तनख्वाह, सरकारी नौकरी की तनख्वाह, कर्मचारियों की तनख्वाह और यह बड़े-बड़े काम जो हो रहे हैं हमारे टैक्स से हो रहे हैं और इसको बनाते भी हम हैं। इन लोगों को भी हम लोगों ने बनाया है। यह हमारे लोग हैं।

चमेली- पर यह बताओ यह आम जनता को बिल्कुल नहीं जानते क्या या इनकी दया मर गई है।

गोपाल- यह सवाल बहुत बड़ा है मुझे तो आजकल यही लगता है कि न तो इनको आम जनता से कोई लेना देना है, न इनके अंदर कोई दया भावना है। अगर दया भावना होती तो अमीर और अमीर ना होता गरीब और गरीब ना होता। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। सुनाऊ?

चमेली -हां हां सुनाओं

गोपाल- कहानी यह है कि कैसे यह खेल चलता है। एक किसान था। बकरी चराने वाला। उसके पास 100 बकरियां थी।

चमेली- अच्छा

गोपाल- एक बार क्या हुआ वह जंगल में बकरियां चलाने गया तो एक बकरी के पैर में बीमारी लग गई।

चमेली- बीमारी?

गोपाल- हाँ बीमारी पंगखुरा बोलते हैं ना उसको।

चमेली- हाँ हाँ ..वह बीमारी पशुओं को लग जाती है खुर पका बोलते हैं उसे ।

गोपाल- हाँ हाँ तू तो बहुत जानती हैं।

चमेली- हाँ.. क्योंकि हम किसान घर से हैं।

गोपाल- अच्छा तू डिजिटल दुनिया की नहीं हैं।

चमेली- वह भी धीरे-धीरे सीख रही हूँ।

गोपाल - वरना बैंक में पेमेंट नहीं होगा, खाता नहीं खुलेगा, वोट नहीं दे, पाओगी।

चमेली-हाँ...यह तो आप जानते ही हैं।

गोपाल- तो जैसे कोरोना फैलता है ना वैसे ही वह बीमारी फैलने वाली थी, तो चरवाहा ने सोचा अच्छा होगा, मैं इस बकरी को यूं ही जंगल में छोड़ दू, ताकि मेरी सौ बकरी मर न जाए। तो एक बकरी को छोड़कर वह चरवाहा आगे की और जंगल में बाकी बकरियों को लेकर चला गया।

चमेली- बड़ा बुद्धिमान था वह।

गोपाल- हाँ.... उसी जंगल में एक कुत्तिया थी जिसने 2 बच्चे पैदा किए। और वह कुत्तिया मर गई।

चमेली- हाँ.... बच्चे अनाथ हो गयें।

गोपाल- हाँ... बच्चे अनाथ हो गए तो अब ऐसा हुआ जंगल में वह बकरी थी, तो वो बकरी के पास आने लगे और बकरी को उसकी ममता बढ़ गई। तो ममता बढ़ने से उसका दूध भी आने लगा और बकरी बहुत घास खाने लगी और दूध देने लगी। वे बच्चे खूब दूध पीकर तगड़े मोटे हो गए।

चमेली- हाँ.... तभी तो कहते हैं ना महिलाओं को भी बोलते हैं, खूब खाओ तभी तो दूध बनेगा।

गोपाल- हाँ.... लेकिन खाने के लिए हो तब ना। अगर थोड़ा सस्ता हो तो खाने को भी मिलेगा। आजकल तो उनमें भी खून की कमी देखी जाती है। क्योंकि इतना होता ही नहीं है, लेकिन बकरी के लिए दिक्कत नहीं थी। बकरी के पास जंगल था ना। बकरी को राशन से 5 किलो गेहूं लाने की जरूरत नहीं थी। लेकिन क्या हुआ पहले तो ऐसा था, परन्तु यहां पर एक शियार आया, वहां बकरी घास खा रही थी, तो सियार ने कहा बकरी तू यहां से घास नहीं खा सकती है, क्योंकि यह जंगल का इलाका हमारा है। हम सरकार के लोग हैं हम लोग यहां पर कुछ विकास के काम करेंगे इस जमीन में। तो अगर तुमको यहाँ रहना पड़ा तो खेती करनी पड़ेगी।

चमेली- खेती करनी पड़ेगी

गोपाल- हाँ...खेती भी बिना कीटनाशक दवाई की खेती करनी पड़ेगी।

चमेली- तो खेती में क्या करना पडा।

गोपाल - शियार ने बताया कि खेती में दाल लगानी होगी ।

चमेली- दाल

गोपाल- हाँ... दालें लगानी है तो बकरी ने खेती करी , बहुत अच्छी फसल हुई और बहुत सारी दाल हुई ।

चमेली- अरे बकरी तो समझदार थी, पूरा खुदाई करके जुदाई करके हल लगाया।

गोपाल- खाद भी उसका अपना था। अभी उसने क्या किया बहुत अच्छी सी दाल हो गई, तो दाल जब निकली तो शियार आया तो शियार ने कहा दाल को अलग करो और घास को अलग करो।

चमेली- अच्छा...

गोपाल- तो बकरी ने दाल और घास को अलग किया फिर शियार ने कहा घास तो तुम ले जाओ दाल में ले जाऊंगा। बकरी ने कहा ऐसा नहीं होगा। बकरी ने सवाल पूछा? तुम बताओ तुम क्या करती।

चमेली- अरे बकरी का सोचो ना बकरी खुद कह रही है कि मैंने मेहनत करी है तो तुम दाल क्यों ले जाओगे। दाल मैं भी तो हमारा हिस्सा हुआ ना ।

गोपाल - हाँ... तो किसानों की डबल इनकम हो जाएगी। तो शियार ने सौदा किया दाल तो हमारी घास तुम्हारा। तो बकरी ने थोड़ा चलाकी करके सोचा कि देखिए सर कल ऐसा करेंगे कल शाम को फैसला करेंगे। मैं अपने बेटों को पूछ कर आती हूँ।

चमेली -हाँ.....मैं अकेले क्या फैसला करूं?

गोपाल- बेटों को पूछने गई घर तो शाम को जाकर बेटों से बात की तो बड़े-बड़े कुत्ते तगड़े पहलवान हो गए थे।

चमेली- वो जो छोटे-छोटे बच्चे थे।

गोपाल- हाँ... वह जो छोटे-छोटे बच्चे थे अब बड़े हो गए थे। दूध पीकर तो बकरी ने पूरी कहानी सुनाई। तो कुत्तों ने कहा मम्मी तुम बीच में चलना हम एक आगे एक पीछे करके चलेंगे। चलते-चलते शियार की नजर कुत्तों पर पड़ी शियार ने जैसे ही कुत्तों को देखा तो वह डर गया। उसकी डर के मारे जान निकल गई, क्योंकि वह इतने बड़े तगड़े थे। शियार ने देखा और अपनी गुफा की तरफभागा तो भागते भागते उसकी पूछ कुत्ते ने पकड़ ली। उसकी पूंछ कुत्ते के मुंह में ही रह गई। शियार गुफा के अंदर चला गया। शियारनी ने बोला पूंछ कहां कटवा कर आ गए।

चमेली- खून निकल रहा होगा।

गोपाल- हाँ....तो फिर शियार ने कहा सरकार ने टैक्स में पूछ ले ली। तो शियारनी को गुस्सा आ गया शियारनी आई बहार, तो उसने पूछा किसने ली मेरे शियार की पूछ? तो कुत्ते बाहर खड़े हुए थे दोनों कुत्तों ने शियार के कान एक इधर से और एक दूसरी तरफ से पकड़े।

चमेली- अपना सिर निकाली होगी वो

गोपाल- हाँ.. कान पकड़ कर खींच लिया अब दोनों कान उनके मुंह में शियानी अंदर गई तो शियार ने कहा क्या हुआ, तो उसने कहा यह सरकारी लोग हैं और तगड़े लोग हैं। उनको तो टैक्स देना पड़ेगा वरना पूंछ, कान और चले जाएंगे।

चमेली- यह तो सोचो खतरे वाली बात है ना।

गोपाल- आजकल टैक्स देना जरूरी है। टैक्स में हमारे पूंछ, कान कुछ भी काटे जा सकते हैं। इसलिये जनता टैक्स देती रहेगी, देती रहेगी।

कहानी-मनमोहक वन

एक घना जंगल था 'मनमोहक वन'। एक बार की बात है, वहां किन्हीं कारणों से भीषण आग लग गयी। सभी परेशान थे। सभी जानवर डर रहे थे की अब क्या होगा? देखते ही देखते आग फैलने लगी, थोड़ी ही देर में जंगल में भगदड़ मच गयी। भगदड़ में सभी जानवर इधर से उधर भाग रहे थे, सभी अपनी अपनी जान बचाने में लगे थे।

उस जंगल में एक नन्हीं चिड़िया रहा करती थी। जब उसने देखा कि लोग भयभीत हैं और जंगल में आग लगी है तो उसने सोचा कि उसे लोगों की मदद करनी चाहिए। बस यही सोचते हुए वह जल्दी ही पास की नदी में गयी और चोंच में पानी भरकर लाई और आग में डालने लगी।

बेचारी बार बार नदी में जाती और अपनी छोटी सी चोच में पानी डालती। वहीं पास से एक उल्लू गुजर रहा था। अचानक चिड़िया की हरकत को देखते हुए सोचने लगा कि ये चिड़िया कितनी वेवकूफहै। आग इतनी भीषण है और ये चोंच में पानी भरकर कैसे बुझा सकती है? यही सोचता हुआ वह चिड़िया के पास गया और बोला कि तुम यह क्या कर रही हो? क्या तुम मूर्ख हो जो इस तरह से आग बुझाने की कोशिश कर रही हो? ऐसे आग नहीं बुझाई जा सकती है।

होशियार चिड़िया ने बहुत विनम्रता के साथ जवाब दिया- 'जी यह मुझे पता है कि मेरे छोटे से प्रयास से शायद ही कुछ होगा लेकिन मुझे अपनी तरफ से जो भी हो सके वह करना है। प्रयास ही बड़ी चीज़ है। आग कितनी भी भयंकर हो लेकिन मैं अपना प्रयास करती रहूंगी'।

यह सुनकर उल्लू बहुत प्रभावित हुआ और चिड़िया की मदद करने लगा।

मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-11

✍शंकर दत्त, श्रमयोग

विनिमय आधारित बाजार को मुद्रा ने नये आयाम दिये, मुद्रा ने बाजार और परिवहन को और मजबूत कर दिया। विनिमय पर सेपियन्म ने बहुत समय तक भरोसा नहीं किया था। यह पूरी तरह विश्वास पर आधारित व्यवस्था थी, बड़े बाजारो में टूटते भरोसे ने विनिमय की व्यवस्था को कमजोर किया। जैसे एक किसान मैदान से पहाड में आकर गेहूँ के बदले पहाड़ी सेव ले गया, लेकिन बहुत दूर यात्रा करने पर उसे लगा कि जो सेव उसने अपने सबसे अच्छे गेहू के बदले लिए थे वे खट्टे थे या मीठे नही थे, बड़े बाजारों में फिर से उस आदमी के मिलने सम्भावना कम थी। इसलिए स्थानीय स्तर पर तो विनिमय लम्बे समय तक चला किन्तु बडे बाजारों ने इसके कई रूप बदलकर इसे छोड़ दिया।

इतिहासकार बताते हैं, कि प्रारम्भ में जब बड़े बाजारों ने विनिमय प्रणाली पर भरोसा कम किया तो रोम के लोगो ने किसी एक ऐसा उत्पाद जिसे पहली नजर देख कर परखा जा सके, को विनिमय का माध्यम बनाया और बड़े बाजारों ने इसे बढे पैमाने पर स्वीकार किया। मुख्य रूप से समझा जाता रहा है कि उस समय विनिमय के लिए स्वीकार्य वस्तु जौ की तरह का एक आनाज था, जो सभी की जरूरत भी थी और देर तक रखी जा सकती थी। इसे अधिक लोगों द्वारा आसानी से परखा जा सकता था, इस व्यवस्था ने काफी समय बाजारों पर राज किया। किन्तु क्षेत्रीय बाजारों पर यह उतना कारगर नही हुआ क्योंकि यहा माँग व पूर्ति का विचार सेपियन्स के समझ में आ रहा था। अच्छी और ज्यादा माँग की वस्तुओं को सेपियन्स को इधर से उधर ले जाना होता था। जिसमें परिवहन व्यय होता था और बहुत दूर व्यापार करना संभव नहीं हो पाता था। अब समय था जब सेपियन्स को व्यापार के लिए ऐसी वस्तु चाहिए थी जिस पर एक अनजान भी भरोसा कर सके और जिसे आसानी से इधर उधर ले जाया जा सके, जो लगभग किसी भी चीज को बदलने के लिए सक्षम बनाता हो।

तब प्राचीन मेसोपोटामिया के सामने आया शेकल- यह था चाँदी का सिक्का, हम्बूराबी सहिंता के दन्ड रूप में चाँदी के सिक्के देने की बात का जिक्र मिलता है। इस समय लोग इस चाँदी के मूल्य को आम कर, विनिमय तय करते थे, परन्तु क्योकि ये पूर्ण रूप से चाँदी थी तो इसमें मिलावट हो सकती थी, इसके चलते इसे पूर्ण स्वीकारिता नहीं थी। किन्तु वस्तु विनिमय के मुकाबले इसने व्यापार को आसान कर दिया। 640 ई0 पूर्व पश्चिम के एक राजा अलियादीस ने इन सिक्को पर दो चीजों को मुद्रित किया एक इसका मानक वजन और दूसरा सिक्का जारी करने वाले का जिक्र। इस में राजा निर्मित सिक्के की गारंटी देता था। आज उपयोग में आने वाले सारे सिक्के इसी परिकल्पना के वंषज हैं।

किताब-'सेपियन्स' और 'आग से अन्तरिक्ष तक' पर आधारित

क्रमशः

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)